सावधान! टीवी स्टूडियो में पहुंच गई है मॉब लिंचिंग... ख़तरनाक हो सकता है टीवी चैनल पर, मुसलमान नाम के साथ, हिंदू राष्ट्र पर बहस में हिस्सा लेना

टीवी स्टूडियो में भी कुछ वैसी ही मानसिकता देखी जा सकती है, जिस तरह से सड़कों पर उन्मादित भीड़ द्वारा लिंचिंग की घटनाएं हो रही हैं...

शम्सुल इस्लाम

बतौर एक लेखक और थियेटर कर्मी मैं लगातार धार्मिक कट्टरता, धर्मांध राष्ट्रवाद, धर्म आधारित निजी कानूनों के नाम पर महिलाओं के उत्पीड़न और दलितों के खिलाफ हिंसा का पुरजोर विरोध करता आया हूं। इसके लिए मुझे अनेक बार निशाना बनाया गया, अपशब्दों से नवाजा गया, गाली-गलौज और धमकियां दी गईं और मेरी खिल्ली उड़ाई गई। मैंने हिंदुत्व की उस राजनीति को लगातार बेनकाब किया है, जिसके अनुसार देश में मुसलमानों और ईसाइयों को नागरिक अधिकारों से महरूम किए जाने की कोशिशें जारी हैं। मैंने बुलंद आवाज में बताया है कि हिंदुत्व की इस राजनीति का मंसूबा देश की कानून व्यवस्था को मनुस्मृति के अनुसार ढालना है, जिसमें हिंदू महिलाओं और शूद्रों/दलितों की हैसियत जानवरों से भी कम आंकी गयी है। हिंदुत्ववादी प्यादे जिस तरह से आम मुसलमानों को 'हरामी', 'कटुवा', 'पाकिस्तानी', 'बलात्कारी', 'अरब शेखों की नाजायज औलाद', 'आईएस के एजेंट', 'हिंदू विरोधी', 'नमक हराम' आदि कहते रहते हैं, मुझे भी उन्होंने यही इज्जत लगातार बख्शी और यह तक मांग की कि "इसे तुरंत देश से निकाल बाहर कर दिया जाना चाहिए।" इस तरह मेरे प्रति कुत्सा जाहिर करते हुए वे इस्लाम और इसके पैगंबर के बारे में भी बेहद भद्दी और अश्लील भाषा, जिस को लिखना मुश्किल है, का उपयोग करने से नहीं चूकते।

मजेदार बात यह है, जब मैं पाकिस्तान और बांग्लादेश में महिलाओं और वहां अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के खिलाफ लिखता हूं, इस्लामी साम्राज्यों में कबीलाई पिछडेपन, अत्याचार वहां कायम तानाशाही, तीन-तलाक, बहुविवाह और मुस्लिम महिलाओं को सताने एवं उन्हे दबाने व उत्पीड़न करने के खातिर शरिया को एक औजार के रूप में प्रयोग करने के बाबत लिखता हूं तो मुझे 'मुस्लिम विरोधी', 'यहूदी एजेंट', 'आरएसएस का दलाल' और क्या नहीं कहा जाता है। मुझसे यहां तक कहा जाता है कि मेरा नाम शम्सुल इस्लाम (इस्लाम के सूर्य) की जगह दुश्मन-ए-इस्लाम (इस्लाम का दुश्मन) होना चाहिए, मुझे अपना नाम बदल लेना चाहिए।

इस किस्म की मलामत बेहद तकलीफदेह है। बावजूद इसके मुझे इस बात को लेकर एक किस्म को इतमिनान भी है कि अगर हिंदू-मुस्लिम दोनों तरह के कट्टरपंथी मुझ पर हमला कर रहे हैं, तो इसका मतलब यह है कि मैं सही रास्ते पर हूं। वे लोग जो छुपकर छद्म पहचान के साथ मुझ पर हमले कर रहे हैं, कायर और डरपोक हैं। इनमें वे लोग भी हैं जो जिसका शासन होता है, उसके अनुसार पाला बदल लेते हैं, उसी के साथ अपनी वफादारी जाहिर करने लगते हैं। ध्रुवीकरण की राजनीति और हवा के रुख के साथ बहने लगते हैं।

भारतीय मीडिया, खासतौर से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हाल के दिनों में किस कदर हिंदुत्ववादी राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार का माध्यम बन चुका है, जग जाहिर है। मेरे साथ अक्सर ऐसा हुआ है, हिंदुत्ववादी संगठनों के बारे में जब मैंने कुछ कहा या बताया, मेरी कही बातों को इस तरह से संपादित कर तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया कि मैंने जो कहा उसकी जगह कुछ और बल्कि मेरे कहे के विपरीत प्रचारित कर दिया गया। मैं यहां इसका एक उदाहरण देना चाहूंगा।

एक प्रमुख टीवी चैनल ने गांधी जी की हत्या पर एक स्टोरी की। बाइट के दौरान मुझसे पूछा गया तो मैंने गांधी की हत्यारे किस संगठन से संबंधित थे, इस बारे में सरदार वल्लभ भाई पटेल के नजरिए की बाबत बताया।

पटेल उस समय देश के गृह मंत्री थे। गांधी जी की हत्या के तुरंत बाद पटेल हत्यारों की राजनीतिक पहचान, हत्यारे किस संगठन से संबंधित थे इस बारे में स्पष्ट नहीं थे, हालांकि नवंबर 1948 तक आते सरदार ने आरएसएस और हिंदू महासभा को इस हत्या के लिए जिम्मेदार पाया था।

गांधी जी की हत्या के तुरंत बाद 27 फरवरी 1948 के पत्र में सरदार ने नेहरू से कहा कि आरएसएस इस हत्या की साजिश में संलिप्त नहीं था, लेकिन उन्होंने तत्कालीन प्रधान मंत्री (नेहरू) को इसी पत्र में यह भी बताया कि "आरएसएस जैसे गुप्त संगठन के मामले में जिसमें कोई रिकॉर्ड, रजिस्टर इत्यादि नहीं है, प्रामाणिक जानकारी हासिल करना कि अमुक व्यक्ति विशेष संगठन का सक्रिय कार्यकर्ता है या नहीं, बेहद कठिन है।"

इस स्टोरी के प्रायोजक/एंकर श्रीनिवासन जैन ने मेरे द्वारा उल्लेखित सरदार के पत्र का केवल वह अंश ही ले लिया जिसमें कहा गया था कि "आरएसएस हत्या में संलिप्त नहीं था", सरदार के पत्र के उस हिस्से को छो? दिया जिसमें उन्होंने लिखा था, "आरएसएस जैसे गुप्त संगठन" के सदस्य के बारे में प्रमाणिक जानकारी हासिल करना मुश्किल था।

इस तरह जैन ने अपने निष्कर्ष को साबित करने के लिए मेरी बाइट को इस्तेमाल किया कि गांधी जी की हत्या में किसी हिंदुत्ववादी संगठन की संलिप्तता को कोई ठोस प्रमाण नहीं था।

दुर्भाग्यवश, टीवी स्टूडियो की स्थिति बद से बदतर होती चली गई है। वहां भी कुछ वैसी ही मानसिकता देखी जा सकती है, जिस तरह से सड़कों पर उन्मादित भीड़ द्वारा लिंचिंग की घटनाएं हो रही हैं। 'मुक्त प्रेस' के नाम पर एक या दो अपवाद ही बचे हैं। चैनल पर लाइव चर्चाओं के दौरान जो कोई भी हिंदुत्व के बारे में उनके कथानक और झूठ का विरोध करता है, उसे राष्ट्र-विरोधी, हिंदू-विरोधी और पाकिस्तानी करार दे दिया जाता है। आप यदि चैनल की इन चर्चाओं में सम्मिलित हैं और आपके नाम से आपकी मुस्लिम पहचान जाहिर होती है और आप हिंदुत्व कथानक और झूठ को चुनौती देते हैं तो आपके साथ सरेआम दुर्व्यवहार होगा; लांछना, लानत-मलामत की बौछार प्रारंभ कर दी जाएगी; माइक पर और माइक से बाहर धमकियां दी जाएंगी।

जुलाई (2018) के दूसरे सप्ताह के अंत की बात है। टीवी पर 45 मिनट की एक लाइव डिबेट रखी गई थी। विषय था 'भारत को हिंदू राष्ट्र होना चाहिए या धर्मनिरपेक्ष'। इस बहस में मुझे भी आमंत्रित किया गया था। बहस की पृष्ठभूमि थी कांग्रेस के सांसद शशि थरूर की एक टिप्पणी, जिसमें थरूर ने कहा था, अगर मोदी 2019 में सत्ता में आए, तो भारत हिंदू पाकिस्तान बन जाएगा। अन्य पैनलिस्टों में भाजपा प्रवक्ता सम्बित पात्रा, स्वतंत्र विशेषज्ञ के बतौर प्रोफेसर कपिल कुमार और कांग्रेस प्रतिनिधि प्रेमचंद मिश्रा थे।

हिंदू राष्ट्र पर बहस शुरू हो इसके पहले ही प्रोफेसर ने ऐलान किया कि उन मुसलमानों के बारे में चर्चा करना जरूरी है जो तीन तलाक, हलाला और पांच विवाह जारी रखना चाहते हैं। सम्बित इस कोरस में शामिल हो गए, उन्होंने घोषित किया कि हिंदू और हिंदुस्तान समानार्थी हैं और मुख्य खतरा कांग्रेस है जो मुस्लिम राजनीति कर रही है। उन्होंने अतीत में मुस्लिमों द्वारा हिंदुओं के उत्पीड़न के बारे में बात की।

मैंने एंकर से पूछा हम किस विषय पर चर्चा कर रहे हैं, लेकिन सम्बित और प्रोफेसर बेरोक-टोक अपनी बात कहते रहे।

मैंने पूछा कि उन्होंने 5 हजार साल की भारतीय सभ्यता के काल में दमन और जुल्म का वर्णन करने के लिए केवल मुस्लिम काल का चयन क्यों किया और यदि मुस्लिम शासकों के अपराधों के लिए सभी भारतीय मुस्लिम जिम्मेदार थे तो माता सीता के अपहरण और द्रोपदी के चीरहरण के लिए कौन जिम्मेदार था और आज किस से बदला लिया जाना चाहिए?

सम्बित और प्रोफेसर दोनों मुझ पर बरस पड़, चिल्लाते हुए कहने लगे मैं हिंदू धर्म और माता सीता का अपमान कर रहा हूं।

हमारे काबिल एंकर ने मुझसे बहुत पुराने इतिहास में नहीं जाने के लिए कहा! सम्बित और प्रोफेसर ने एजेंडा तय कर दिया था कि हिन्दू राष्ट्र पर बहस न होकर मुसलमानों के जुल्मों पर चर्चा होगी।

कांग्रेस के मुस्लिम समर्थक चरित्र पर जोर देने के लिए, सम्बित ने 2014 की एक प्रेस क्लिपिंग पेश की, जिसमें लिखा था कि भारत के निर्वाचन आयोग को यह शिकायत प्राप्त हुई थी कि राहुल गाँधी ने घोषणा की थी कि 2014 के चुनावों में यदि मोदी सत्ता में आए तो हजारों मुसलमानों का कत्लेआम होगा।

क्लिपिंग को इस तरह पेश किया गया गोया कि चुनाव आयोग ने इस पर संज्ञान लेकर राहुल गांधी को झिड़की दी थी। होना तो यह चाहिए था इस मनगढ़त आरोप पर कांग्रेस प्रतिनिधि अपना विरोध जाहिर करते, परंतु वे उपहासपूर्ण ढंग से बस मुस्कुराते रहे। मुझसे रहा नहीं गयां और सबित से पूछ लिया कि चुनाव आयोग ने इस आरोप पर संज्ञान लिया था या नहीं?

मेरे सीधे से सवाल का जवाब देने के बजाय सम्बित ने घोषित कर दिया कि राहुल का बचाव करने के लिए कांग्रेस द्वारा चेक के माध्यम से मुझे पैसे दिए गए हैं। अपनी मसकरों वाली शैली में उन्होंने यह आरोप पांच बार दोहराया। कांग्रेस प्रतिनिधि बस मुस्कुराता रहा। एंकर ने भी इसे हलके में लेकर नजरंदाज करने का ही रवैया अपनाया।

इस दौरान प्रोफेसर माइक पर मुझे अपमानित करते रहे और इसे यहाँ क्यों बुलाया है, चिल्लाते हुए अपने स्थान से बाहर हो गए (लेकिन स्टूडियो में में ही स्टाफ के लिए रखी एक कुर्सी पर बैठ गए)। वह मांग कर कर रहे थे कि हिंदू राष्ट्र पर मेरी बात सुनने के बजाय, मुझसे तीन-तलाक, हलाला और पांच बार शादी (संख्या 4 से बढ़कर 5 कैसे हो गई कोई नहीं जानता) करने की अनुमति के बारे में पूछा जाना चाहिए।

ब्रेक के दौरान स्टूडियो में जब हम बैठे हुए थे उन्होंने मुझे 'हरामी' और 'बहनचोद' जैसी गलियों से नवाजा। एंकर, जिससे विषय पर सार्थक बहस के लिए मार्गदर्शन की उम्मीद की जाती थी, हिंदू राष्ट्र का पक्ष पोषण करने वाले, सम्बित और कांग्रेस के प्रतिनिधि, इस सब के बावजूद चुप रहे। अब भी एंकर ने प्रोफेसर साहेब को स्टूडियो छोड़ने के लिए नहीं कहा।

अभी और बदतर होना बाकी था, हिंदू राष्ट्र पर चर्चा का समाहार करने के बजाय एंकर ने अचानक घोषणा की कि "शम्सुल इस्लाम मैंने प्रोफेसर कपिल कुमार से इस बाबत आपके जवाब का वायदा किया है कि मुसलमान मुस्लिम महिलाओं के बराबर अधिकार क्यों नहीं देते हैं", उन्होंने आगे कहा कि मुस्लिम एक राष्ट्र, एक कानून नहीं चाहते हैं। तीन-तलाक, हलाला और बहुविवाह का प्रचलन जारी रखना चाहते हैं। मैंने यह बताने की कोशिश की कि सभी मुस्लिम एक तरह के नहीं हैं। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय का जो भी फैसला होगा सभी उसे मानेंगे। लेकिन एंकर जोर देकर मेरे बारे में कहते रहे कि मैं भी उन मुसलमानों में से हूं, जो इन सभी महिला-विरोधी प्रचलनों के हिमायती हैं।

भारत को हिंदू राष्ट्र में परिवर्तित करने के आरएसएस के एजेंडे वाली मूल बहस इस तरह "औरत विरोधी इस्लाम धर्म" की चर्चा पर खत्म हुयी!

मॉब लिंचिंग का अर्थ है भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या

- गिरीश मालवीय

अमेरिका के बहुत से राज्यों में भीड़ द्वारा की जाने वाली हत्याओं का एक लंबा इतिहास रहा है जिसे लिंचिंग कहा गया। अमेरिकी गृह युद्ध के खत्म होने के बाद जैसे ही कालों को बराबरी के अधिकार मिले वैसे ही गोरों ने कालों की लिंचिंग शुरू कर दी थीं।

जर्मनी में यहूदियों के खिलाफ 'लिंच मॉब्स' के मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर बहुत सारी रिसर्च की गई। तब के मनोवैज्ञानिकों का कहना रहा कि इस तरह की तमाम हत्याओं के पीछे नित्य पैदा की गई सामूहिक घृणा का हाथ था।

चर्चित मनोविश्लेषक जी ली बॉन ने 19वीं सदी के अंत में लिखी अपनी प्रसिद्ध किताब 'द क्राउड' में लिखा है कि किसी एक व्यक्ति के मुक़ाबले भीड़ का व्यवहार पूरी तरह अलहदा होता है। उनके मुताबिक़ 'भीड़ में शामिल लोग किसी भी तरह के हों,सच्चाई ये है कि वो भीड़ का हिस्सा बन चुके हैं। लिहाजा उनके सोचने-समझने की दिशा सामूहिकता के साथ जुड़ जाती है। यही सामूहिकता तय करती है कि वह व्यक्ति किस तरह सोचेगा, महसूस करेगा और किसी ख़ास परिस्थिति में किस तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त करेगा।'

भीड़ की बौद्धिकता भीड़ से अलग एक व्यक्ति की बौद्धिकता से कमतर होती है क्योंकि भीड़ तार्किक तरीके से सोचने में सक्षम नहीं हो पाती। भीड़ हमेशा मौक़े के मुताबिक़ रिएक्ट करती है।'

आज जब यह माना जा रहा कि आधुनिक मानव सभ्य बन रहा है भारत मे भीड़ असभ्य ओर हिंसक होती जा रही है। आज ये भीड़ स्वयं को बहुसंख्यक लोकतंत्र के एक हिस्से के तौर पर दिखती है जहां वह ख़ुद ही क़ानून का काम करती है, खाने से लेकर पहनने तक सब पर उसका नियंत्रण होता है।

भीड़ को पता है कि गाली गलौज करने वालो को देश का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फॉलो करते है भीड़ को पता है कि केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिह आरोपियों के घर जाकर आंसू बहाते हैं। भीड़ को पता है कि केंद्रीय मंत्री जयंत सिन्हा जमानत पर छुटे आरोपियों को माला पहना कर स्वागत करता है। भीड़ को पता है कि अख़लाक़ की हत्या में शामिल लोगों को हज्ञक्क्ष्ट में नॉकरी दिलवा दी जाती है , भीड़ का नेतृत्व करने वाले जानते हैं कि बड़े नेताओं मंत्रियों की निगाह में चढ़ने का यही साधन है।

भारत मे भीड़ का सबसे आसान शिकार मुसलमान है वैसे ऐसा भी नही है कि सिर्फ मुसलमान ही इस मोब लिंचिंग का शिकार हो रहे हैं असम में किसी दूरस्थ गांव में बसे मुम्बई के 2 साउंड इंजीनियर को बच्चा चोर बता कर मार डाला गया, लेकिन 2017 में आयी इंडिया स्पेंड की रिपोर्ट बताती हैं कि मुसलमान भीड़ का सबसे आसान शिकार होते हैं और वही सबसे पहले निशाना बनते है।

पिछले दो महीनों में 30 से ज्यादा लोग भीड़ हिंसा का शिकार हो चुके हैं

पिछले दो महीनों में 30 से ज्यादा लोग भीड़ हिंसा का शिकार हो चुके हैं। यह किसी एक राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि 14 राज्यों तक इसका विस्तार है। ये 'बाहरी' लोग करार देकर व उनसे सुरक्षा के डर में मारे गए हैं अथवा साम्प्रदायिक आग्रहों के कारण मारे गए हैं। कथित भीड़-हत्या की घटनाओं का राष्ट्रीय कनेक्शन क्या है। भारत में एकदम बर्बरता, हिंसा का विस्फोट हो रहा है और भारत लोकतंत्र के स्थान पर भीड़तंत्र में बदल रहा है।

हरियाणा के दुलीना में 2003 में पाँच लोगों को मार दिया गया था। जिसमें तीन दलित और दो मुसलिम थे। तब इसे मिस्टेकन आईडेंटिटी कहकर पल्ला झाड़ लिया था। यदा-कदा भीड़ द्वारा हत्या करने की घटनाएं सुनने में आती रही हैं, लेकिन अब ये हर रोज की सुर्खियां बनने लगी हैं। अब यह समस्या विकराल रूप धारण कर रही है।

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश की अध्यक्षता में खंडपीठ ने इसका कड़ा संज्ञान लेते हुए पीठ ने कहा, 'भीड़तंत्र की भयावह गतिविधियों को नया चलन नहीं बनने दिया जा सकता, इनसे सख्ती से निपटने की जरूरत है.' उन्होंने यह भी कहा कि राज्य ऐसी घटनाओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। इस अपराध के लिए अलग से कानून बनाने को कहा है, जो समस्या की गंभीरता की और संकेत करता है।

बाहरी व्यक्ति को अपने लिए खतरा मानकर उसकी हत्या कर देना और किसी विशेष समुदाय के लोगों को निशाना बनाकर हत्या करने के दो तरीके सामने आए हैं, लेकिन स्वामी अग्निवेश न तो बाहरी थे और न ही दूसरे समुदाय से संबंधित, बल्कि वे तो गेरुआ वस्त्र धारण करते हैं और आर्य समाजी हैं। उन पर हिंसा ने भीड़ तंत्र के वास्तविक चेहरे व लक्ष्य को उद्घाटित किया है। स्वामी अग्निवेश पर भीड़ ने हमला कर दिया इससे कई सवाल दिमाग में उपजते हैं।

कुछ लोग कह रहे हैं कि कुछ सिरफिरे लोगों ने हिंसा की है। सोचने की बात है कि ये चंद सिरफिरे लोगों की भीड़ है अथवा संगठित गिरोह जो भीड़ के रूप में आते हैं। ये भीड़ मनोविज्ञान नहीं यह एक टारगेटिड़ व राजनीतिक हिंसा है। असल में तो यह आतंकवादी कार्रवाई ही है। भीड़ का मुखौटा लगाकर गुजरात, मुंबई, दिल्ली समेत देश के अनेक शहर राख में तबदील होते रहे हैं। भीड़ का चेहरा लगाकर ही आरक्षण की आग में हरियाणा जल जाता है।

कहा जाता है कि भीड़ में दिमाग नहीं होता अच्छे बुरे की पहचान करने का लेकिन यह भीड़ बड़ी सयानी व हाईटेक है। जो अच्छी तरह पहचानती अपने निशाने को। भीड़ तो बचाव का कवच है। भीड़ की पहचान नहीं है इसलिए अपने बचने का रास्ता है।चिंता की बात ये है कि भीड़-हिंसा के अपराधियों को अब नायकों की तरह देखा जाने लगा है। सत्ता तंत्र से जुड़े लोग इनके स्वागत-सम्मान में फूल-मालाएं पहनाते हुए यत्र-तत्र दिखाई देंगे।

इस बात से पर्दा उठ रहा है कि यह हिंदू बनाम मुसलिम का विवाद नहीं है, बल्कि यह कट्टरता बनाम उदारता का है। साम्प्रदायिक राजनीति का वास्तविक चरित्र ही यही है कि वह वैचारिक तौर पर तो एक धर्म से ताल्लुक रखने वाले लोगों को अपना शत्रु नं. एक घोषित करता है, लेकिन वास्तव में अपने धर्म की उदार परंपराओं और उनको मानने वालों पर ही निशाना साधता है।

वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनको मालूम है कि सता प्राप्त करने और सत्ता प्राप्त करके अपने अंतिम मंसूबों को अंजाम देने में अल्पसंख्यक कोई रोड़ा नहीं हैं, बल्कि अपने धर्म के उदारपंथी लोग व उदार-सहिष्णु विरासत ही सबसे बड़ी बाधाएं हैं। अल्पसंख्यकों के खिलाफ नफरत फैलाकर वे बहुसंख्यकों के एक हिस्से से समर्थन जुटाते हैं और अपने धर्म के लोगों को निशाना बनाते हैं।

भारत के समाज में जहां इतनी तरह की विचारधाराएं निरंतर फलती-फूलती रही वहां इस तरह के मंजर विचलित करने वाले हैं।उन सबके लिए खतरे की घंटी है जो विवेक, तर्क में विश्वास करते हैं। लेकिन विडम्बना यही कि धर्मनिरपेक्ष राजनीति का दावा करने वाली विभिन्न धाराएं इसे कुछ सिरफिरों की करतूत मानकर इसकी गंभीरता को नहीं समझती। कथित धर्मनिरपेक्ष शक्तियां अपने अपने राजनीतिक समीकरणों और फायदे-नुक्सान के हिसाब से बयानबाजी व कार्रवाही करेंगी और अपना राजनीतिक गणित में मशगूल रहेंगी। क्या कभी इसके खिलाफ ऐसा आंदोलन कर पाएंगी कि पूरे देश को झिझोंड़ कर रख दे।

हिटलर काल के जर्मन पादरी निमोलर की वो कविता इस परिस्थिति को बेहतर ढंग से अभिव्यक्ति करती है।

पहले वे आए यहूदियों के लिए और मैं कुछ नहीं बोला,
क्योंकि मैं यहूदी नहीं था
फिर वे आए कम्यूनिस्टों के लिए और मैं कुछ नहीं बोला,
क्योंकि मैं कम्यूनिस्ट नही था
फिर वे आए मजदूरों के लिए
और मैं कुछ नहीं बोला क्योंकि मैं मजदूर नही था
फिर वे आए मेरे लिए,
और कोई नहीं बचा था,
जो मेरे लिए बोलता..।

- इंडिया टुडे से साभार